कमल कपूर

ई-मेल:kamal_kapur2000@yahoo.com

जय माता दी

डॉक्टर ने 'सोनोग्राफी' की मौखिक रिपोर्ट बताई, "जय माता दी।"

"समझ गई...बेबी गर्ल न? थैंक्यू डॉक्टर साहिबा और थैंक्यू गॉड!" हुलसते हुआ कहा उसने तो डॉक्टर चौंकीं, "अरे! मैं पहली लड़की देख रही हूँ? जो इस खबर से इतनी खुश है...ज़्यादातर महिलाएँ तो इसीलिए 'सोनोग्राफी' करवाती हैं कि लड़की हो तो जान छुड़ा लें और फिर आपकी तो पहले भी एक बेटी है, फिर दूसरी बेटी की ख़बर से इतनी खुश क्यों हैं आप ?"

"क्योंकि मैंने अपनी माँ और अन्य कई माँओं को बेटों से दुख और बेटियों से सुख पाते देखा-सुना है इसीलिए..."

"और आज अगर रिज़ल्ट में बेटा होती तो क्या उसे अबॉर्ट...?"

"अरे नहीं-नहीं डॉक्टर साहिबा ! मैं हत्यारिन हूँ क्या? हाँ ! मैं यह ज़रूर करती कि गर्भ में ही उसे मानवता के सारे पाठ पढ़ा देती । ख़ैर ! जाने दीजिए! डॉक्टर साहिबा! बाहर मेरी सास बैठी हैं, प्लीज़ आप उन्हें बेटा होने की बात ही कहिएगा ताकि मेरी बेटी को जीवन-दान मिल सके और प्रसव तक मैं चैन से वक्त काट सकूँ ।"

"ओके जी! जय माता दी।" डॉक्टर मुस्कुराईं ।

"जय माता दी।" वह भी मुस्कुराई ।

दृष्टिकोण

'पलाश-पार्क' में वे दोनों आमने-सामने बैठी थीं । वार्ता चल रही थी...विषय था—घर ।

"औरत का कोई घर नहीं होता । मैं अपनी ही बात करूँ तो...जहाँ जन्मी-पली, वह पिता का घर था। वहाँ सुन-सुनकर कान पक गए कि पराए घर जाना है तुझे, फिर धकेल दी गई पराए घर, जो पति का घर था। अब पति नहीं रहे तो पुत्र के घर पर ला पटका है खुद को । अब तुम्हीं बताओ कि कहाँ है मेरा घर ?"

"ऐसा मत कहो प्लीज़! और ध्यान से मेरी बात सुनो...मैं अपने ही घर जन्मी-पली-पढ़ी और वह अब भी मेरा घर है क्योंकि वह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। पति चाव से ब्याहकर ले गए और बोले, 'मैंने तो मकान बनाया था, घर तो तुम बनाओगी।' और मैंने जैसे जन्नत उतार दी अपने घर में । अब बेटा-बेटी अलग-अलग शहरों में रहते हैं...यानी दो घर और हो गए, जहाँ मेरा आना-जाना लगा रहता है । मैं सोचती हूँ कि कितने मज़े हैं न हम औरतों के...कितने सारे घर हैं हमारे । अपनी दृष्टि का कोण बदलकर देखो मेरी दोस्त ! हर घर तुम्हें अपना ही घर लगेगा ।"